जन्म शताब्दी के अवसर पर

पाब्लो नेरूदा की एक कविता

मैं कुछ चीज़ें समझाता हूँ*

(कवितांश)

तुम पूछोगे : कहाँ है बकायन के पौधे?
और पॉपी के फूलों का आच्छादित अध्यात्म?
और वह बारिश जो तुम्हारे शब्दों को अक्सर
छिद्रों और चिड़ियों से भर देती थी?

मुझ पर जो बीतती है, सब बताता हूँ।

मैं रहता था माद्रीद के एक मुहल्ले में
घण्टियों, घड़ियों, पेड़ों के साथ।

वहाँ से दीखता था
स्पेन का सूखा चेहरा
जैसे चमड़े का एक समुद्र।

मेरा घर कहलाता था
फूलों का घर, क्योंकि चारों तरफ फूलते थे
जिरेनियम ही जिरेनियम:

वह एक खूबसूरत घर था
कुत्तों और बच्चों से भरा हुआ।
.....
और एक सुबह सब कुछ जल रहा था
और एक सुबह अलाव
जमीन से बाहर आये लोगों को लीलते हुए,
और तबसे आग,
बारूद तबसे
और तबसे रक्तपात।

हवाई जहाजों और मूरों के साथ लुटेरे,
अँगूठियों और ड्यूक-पत्नियों के साथ लुटेरे,
काले लबादों में आशीर्वाद देते धर्मप्रचारकों के साथ लुटेरे,
आसमान से आये बच्चों की हत्या करने
और सड़कों पर बच्चों का रक्त
दौड़ा महज बच्चों के रक्त की तरह।
गीदड़ जिन्हें गीदड़ भी दुतकारते,
पत्थर जिन्हें सूखा गोखरू थूकते-थूकते काटता,
जहरीले साँप जिनसे जहरीले साँप भी घृणा करते।

तुम्हारे ही सामने मैंने देखा है
स्पेन के रक्त को उफान लेते हुए
तुम्हें गौरव और चाकुओं की
एक ही लहर में डुबोते हुए।

धोखेबाज जनरलों :
मेरे मरे हुए घर को देखो,
तहस-नहस स्पेन को देखो :
बल्कि प्रत्येक मरे हुए घर से फूलों के
बजाय जलती धातु निकल रही है
बल्कि स्पेन के हरेक गड्ढे से
स्पेन ही आ रहा है बाहर,
बल्कि हरेक मृत शिशु से आँखों वाली बन्दूक निकल रही है,
बल्कि हरेक जुल्म से पैदा हो रही हैं गोलियाँ
जो एक दिन ढूँढ़ लेंगी
कहाँ पर है तुम्हारा दिल।

तुम पूछोगे कि तुम्हारी कविता
हमें क्यों नहीं बतलाती
नींद, पत्तियों के बारे में, तुम्हारी मातृभूमि के
भीषण ज्वालामुखियों के बारे में ?
आओ और देखो सड़कों पर बहता लहू,
आओ और देखो
सड़कों पर लहू,
आओ और देखो लहू
बहता हुआ सड़कों पर।

**पाब्लो नेरूदा की इस प्रसिद्ध कविता की विषय-वस्तु स्पेन में फासिस्टों द्वारा बर्बर दमन और नरसंहार है। दुनिया के तमाम मानवद्रोही फासिस्ट आततायियों के विरूद्ध यह कविता आज भी अदम्य प्रतिरोध की एक अनश्वर अनुगूँज के समान है।*